

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'



प्रेमघन जी भारतेन्दु युग के महत्त्वपूर्ण कवि थे। उनका जन्म 1855 ई० में मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ और निधन 1922 ई० में। वे काव्य और जीवन दोनों क्षेत्रों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को अपना आदर्श मानते थे। वे निहायत कलात्मक एवं अलंकृत गद्य लिखते थे। उन्होंने भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया था। 1874 ई० में उन्होंने मिर्जापुर में 'रसिक समाज' की स्थापना की। उन्होंने 'आनंद कादंबिनी' मासिक पत्रिका तथा 'नागरी नीरद' नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन किया। वे साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन के सभापति भी रहे। उनकी रचनाएँ 'प्रेमघन सर्वस्व' नाम से संगृहीत हैं।

प्रेमघन जी निबंधकार, नाटककार, कवि एवं समीक्षक थे। 'भारत सौभाग्य', 'प्रयाग रामागमन' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। उन्होंने 'जीर्ण जनपद' नामक एक काव्य लिखा जिसमें ग्रामीण जीवन का यथार्थवादी चित्रण है। प्रेमघन ने काव्य-रचना अधिकांशतः ब्रजभाषा और अवधी में की, किंतु युग के प्रभाव के कारण उनमें खड़ी बोली का व्यवहार और गद्योन्मुखता भी साफ दिखलाई पड़ती है। उनके काव्य में लोकोन्मुखता एवं यथार्थ-परायणता का आग्रह है। उन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता की चेतना को अपना सहचर बनाया एवं साम्राज्यवाद तथा सामंतवाद का विरोध किया।

'प्रेमघन सर्वस्व' से संकलित दोहों का यह गुच्छ 'स्वदेशी' शीर्षक के अंतर्गत यहाँ प्रस्तुत है। इन दोहों में नवजागरण का स्वर मुखरित है। दोहों की विषयवस्तु और उनका काव्य-वैभव इसके शीर्षक को सार्थकता प्रदान करते हैं। कवि की चिंता और उसकी स्वरधंगिमा आज कहीं अधिक प्रासंगिक है।



स्वदेशी

सबै बिदेसी वस्तु नर, गति रति रीत लखात ।
 भारतीयता कहू न अब, भारत म दरसात ॥1॥
 मनुज भारती देखि कोउ, सकत नहीं पहिचान ।
 मुसल्मान, हिंदू किधौ, कै हैं ये क्रिस्तान ॥2॥
 पढ़ि विद्या परदेस की, बुद्धि विदेसी पाय ।
 चाल-चलन परदेस की, गई इन्हें अति भाय ॥3॥
 ठटे बिदेसी ठाट सब, बन्यो देस बिदेस
 सपनेहुँ जिनमें न कहूँ, भारतीयता लेस ॥4॥
 बोलि सकत हिंदी नहीं, अब मिलि हिंदू लोग ।
 अंगरेजी भाखन करत, अंगरेजी उपभोग ॥5॥
 अंगरेजी बाहन, बसन, वेष रीति औ नीति ।
 अंगरेजी रुचि, गृह, सकल, वस्तु देस विपरीत ॥6॥
 हिन्दुस्तानी नाम सुनि, अब ये सकुचि लजात ।
 भारतीय सब वस्तु ही, सों ये हाय घिनात ॥7॥
 देस नगर बानक बनो, सब अंगरेजी चाल ।
 हाटन में देखहु भरा, बसे अंगरेजी माल ॥8॥
 जिनसों सम्मल सकत नहिं तनकी, धोती ढीली-ढाली ।
 देस प्रबंध करिहिंगे वे यह, कैसी खाम खयाली ॥9॥
 दास-वृत्ति की चाह चहूँ दिसि चारहु बरन बढ़ाली ।
 करत खुशामद झूठ प्रशंसा मानहुँ बने डफाली ॥10॥



बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
2. कवि को भारत में भारतीयता क्यों नहीं दिखाई पड़ती ?
3. कवि समाज के किस वर्ग की आलोचना करता है और क्यों ?
4. कवि नगर, बाजार और अर्थव्यवस्था पर क्या टिप्पणी करता है ?
5. नेताओं के बारे में कवि की क्या राय है ?
6. कवि ने 'डफाली' किसे कहा है और क्यों ?

7. व्याख्या करें -

(क) मनुज भारती देखि कोउ, सकत नहीं पहिचान ।

(ख) अंग्रेजी रुचि, गृह, सकल बस्तु देस विपरीत ।

8. आपके मत से स्वदेशी की भावना किस दोहे में सबसे अधिक प्रभावशाली है ? स्पष्ट करें ।

कविता के आस-पास

1. नवजागरण के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी लें और एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें ।
2. भारतेन्दु हिंदी नवजागरण के अग्रदूत थे । इस संबंध में अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
3. भारतेन्दु हरिश्चंद्र के साथ प्रेमघन के संबंधों के बारे में भारतेन्दु युग पर लिखी पुस्तकों की सहायता लेकर जानकारी प्राप्त करें ।
4. 'स्वदेशी' शीर्षक के अंतर्गत रखी जाने योग्य भारतेन्दु युग के कवियों की कुछ रचनाएँ एकत्र कीजिए ।
5. विद्यालय के पुस्तकालय से रामचंद्र शुक्ल का निबंध 'प्रेमघन की छाया स्मृति' खोजकर पढ़ें और शिक्षक एवं मित्रों से चर्चा करें ।

भाषा की बात

1. निम्नांकित शब्दों से विशेषण बनाएँ -

रुचि, देस, नगर, प्रबंध, खयाल, दासता, झूठ, प्रशंसा

2. निम्नांकित शब्दों का लिंग-निर्णय करते हुए वाक्य बनाएँ -

चाल-चलन, खामखयाली, खुशामद, माल, वस्तु, वाहन, रीत, हाट, दासवृत्ति, बानक

3. कविता से संज्ञा पदों का चुनाव करें और उनके प्रकार भी बताएँ ।

शब्द निधि

गति	: स्वभाव
रति	: लगाव
रीत	: पद्धति
मनुज भारती	: भारतीय मनुष्य
क्रिस्तान	: क्रिश्चियन, अंग्रेज
बसन	: वस्त्र
बानक	: बाना, वेशभूषा
खामखयाली	: कोरी कल्पना
चारहु बरन	: चारों वर्णों में
डफाली	: डफ बजानेवाला, बाजा बजानेवाला

